सं० ग्रो॰वि॰/एफ॰की॰/98-86/32468.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि एग्रो इक्यूपमेंस्टस (इण्डिया) 'स्ताट नं. 88 सैक्टर-24, फरोदाबाद, के श्रमित श्री राज जरोसी लाज, पुत श्री वेदी राम, गांव स्याहीपुरा, डा॰ पछाई गांव जि॰ श्रागरा, उस्तरप्रदेश तथा उसकी प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिल्सि मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैत निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई विवर्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिस्चना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुये ग्रीधस्चना सं. 11495-अ-श्री-श्रम-57/11245, दिनोंक 7 करवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रीधस्चना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, करीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायितणैं एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्राया सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम भरोसी लाल की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो॰ वि॰/यम्ना॰/९७-86/32470. —चूंकि हरियाणा के राज्यवाल की राय है कि मैं॰ हुडेवाला पाम जगाधरी के श्रमिक श्री साना मार्पत पंडित मधुसुदन शरण कोशिश लठमारन गली जगाधरी, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते ह्ये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना संव 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रिपेल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री साना की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? संब श्रो॰ वि०/एफ॰डी॰/४2-४५/32475.--च्रिक हरियाणा के राज्यपाल की राज है कि मैं॰ ऐवरी इण्डिया लि॰, सैक्टर-25, बल्लबगढ़ के श्रीमक श्री जगदीश कुमार मार्फत श्री जे. एस. सरोहा मकान 1487, मैक्टर-16, फरीदाबाद, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है ;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेनु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रीबोगिक विवाद प्रधितियम, 1917 की आहा 10 की उरशारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं० 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रीधसूचना की धारा 7 के श्रीमा गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद ती। नाज में देने हु। निर्देश्य करने हैं जो कि उत्त प्रवत्य की की बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से स्मंगत प्रयत्न सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री जगदीश कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो यह किस राहत का हकदार है ?

संबंधी विव /एफ डी व / 59-86 / 32486 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं व निक्कीताण इण्डिया प्राव् लि. सैंक्टर-6, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री सी.पी. मल्होता, मकान 317 / 7, नंगला रोड़, जबाहर कलोनी, फरीदाबाद, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिवितयम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का अयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 5415—3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं० 11495—जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधसूचना की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद की विवादगस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनणेय एव पचाट तीन मास में देने हेतु निविद्य करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादगस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा संबंधित भामला है:—

क्या श्री सी. पी. मल्होज़ा की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?